

२३. भूख

प्रस्तावना

* उत्तर प्रदेश के बस्ती नामक गाँव में जन्मे इस कविता के कवि का नाम **सर्वेश्वर दयाल सक्सेना** है। उनका जन्म सन **1926** और निधन सन **1983** को हुआ था। उनका शुरुआती जीवन काफी आर्थिक अभावों में गुजरा था। पर इस सब के बावजूद उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में **एम.ए.** किया और पहले शिक्षक, फिर क्लर्क और बाद में आकाशवाणी में नौकरी की। अंत में वे 'दिनमान' के उपसंपादक भी रहे थे। उनकी रचनाओं की बात करे तो '**जंगल का दर्द**', '**कुआनो नदी**', '**गर्म हवाएँ**', '**खूंटियों पर टँगे लोग**', '**क्या कह कर पुकारूँ**', '**कोई मेरे साथ चले**' आदि इनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं। उन्होंने '**बतूता का जूता**' नामके एक बाल संग्रह की भी रचना की और कई नाटक भी लिखे हैं।

इस कविता में इन्होंने पृथ्वी के विविध जीवों के भोजन के लिए किए गए संघर्ष की चर्चा की है और जीवन में संघर्ष का महत्त्व समझाया है। तो आइए इस कविता का अध्ययन करते हैं।

स्वाध्याय

१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१. कवि ने प्राणियों में सोन्दर्य कब देखा ?

उत्तर : प्राणी जब अपनी भूख मिटाने के लिए संघर्ष करते हैं तब कवि ने उनमें सोन्दर्य देखा।

२. कवि के अनुसार बकरी में सुन्दरता कब प्रकट होती है ?

उत्तर : कवि के अनुसार बकरी जब अपने दोनों पैरों पे खड़ी होकर कांटों के बीचसे नन्ही पत्तिया खाती है तब सुन्दरता प्रकट होती है।

३. कवि ने भूख की दशा को क्यों सुन्दर कहा है ?

उत्तर : प्रत्येक प्राणी भूख की दशा में संघर्ष करने को तैयार होता है, जब वह भूख के खिलाफ संघर्ष करता है तब सुन्दर दिखता है। इसलिए कवि ने भूख की दशा को सुन्दर कहा है।

२. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :

जब भी

भूख से लड़ने

कोर खड़ा हो जाता है

सुन्दर दिखने लगता है

भावार्थ : भूख से संतुष्टि का एकमात्र मार्ग है महेनत । इसलिए कोई भी प्राणी अपनी भूख मिटाने के लिए जब संघर्ष करता है । जब वह अपनी आलस त्याग कर खड़ा होकर संघर्ष करता है तब वह सुन्दर दिखता है । उस संघर्ष में कवि को सुन्दरता दिखती है ।

